'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

आदिवासी पीड़ा की सशक्त अभिव्यक्ति :निर्मला पुतुल की कविताएँ

-डॉ.कामायनी गजानन सुर्वे
सहयोगी प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
महात्मा फुले महाविद्यालय,
पिंपरी,पुणे(महाराष्ट्र, भारत)

सार-संक्षेप (Abstract):

निर्मला पुतुल 21 वीं शताब्दी की विख्यात आदिवासी कवयित्री हैं ।झारखंड के संताल परगना के दुधनी कुरुवा में आपका जन्म हुआ है ।स्वयं आदिवासी होने के कारण आपकी कविताओं में आदिवासी लोगों के पीड़ादायी यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है ।निर्मला जी ने अपनी मातृभाषा संताली तथा हिंदी में कविताएँ सृजित की हैं ।आदिवासियों का शोषण ,जीवन संघर्ष,अस्मिता ,उनकी समस्याओं का सामाजिक यथार्थ ,आदिवासी महिलाओं के सामाजिक सरोकार , विस्थापन,उनकी शिक्षा ,उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने की कोशिश,मानवाधिकार जैसी बहुआयामी चेतना से अनुप्राणित निर्मला जी की कविताओं में आदिवासियों को विद्रोह की ताकत देने वाले आस्था के स्वर गूँज उठे हैं ।आदिवासी विमर्श की दृष्टि से आपकी कविताओं का अनुशीलन किया जा सकता है ।कवयित्री के अनुसार आदिवासी जब अपने शोषण के ख़िलाफ़ आवाज उठाएँगे तब वे शब्द नगाड़े की तरह बजेंगे।

बीज शब्दावली (Key Words):

निर्मला पुतुल ,कविता,आदिवासी पीड़ा ,आदिवासी विमर्श,अभिव्यक्ति,नगाड़े की तरह बजते शब्द

1.प्रस्तावना (Introduction):

वंचितों के साहित्य में आदिवासी विमर्श की रचनाओं का विशिष्ट स्थान है ।आदिवासी का अर्थ असल में धरा के मूल निवासी है।अपनी मातृभाषा ,संस्कृति ,प्राकृतिक जीवनमूल्य ,परिवेश से उनकी अपनी विशिष्ट पहचान है ।आदवासियों का अधिवास विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में है ।

मुख्यधारा के लोग इन्हें पिछड़े हुए कहते हैं ।शिक्षा का आभाव,अंधविश्वास,सुदूर क्षेत्रों में निवास जैसे इस पिछडेपन के कुछ कारण हैं ।भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए जनजाति शब्द प्रयुक्त है ।भारतीय संविधान की पाँचवीं तथा छठीं अनुसूची में आदिवासी विकास के प्रावधान किए गए हैं ।भारत के सभी आदिवासियों को छठी अनुसूची के अंतर्गत रखा जाए तो उनके विकास की संभावनाएँ अधिक होंगी ।हिंदी में आदिवासी विमर्श का साहित्य अभी कम मात्रा में है ।आदिवासी साहित्य का सौंदर्यशास्त्र अलग है क्योंकि यह समाज हाशिये पर है ,वंचित और शोषित है ।

2.साहित्य सर्वेक्षण (Reveiw of Literature):

आदिवासी विमर्शतथा निर्मला पुतुल की कविताओं पर निम्नांकित अनुसंधान कार्य अभी तक संपन्न हुआ है :

- संपा.(डॉ.)गुप्ता,रमणिका .आदिवासी स्वर और नई शताब्दी.नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन,2014
- (डॉ). रमया बलान .के. निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री.मार्च,2017
- सेठी ,रेखा .निर्मला पुतुल की कविताएँ: आदिवासी पीड़ा और प्रतिरोध का काव्य-संसार,2017
- प्रस्तुत शोध-निबंध में निर्मला पुतुल की कविताओं का आदिवासी विमर्श की दृष्टि से मूल्यांकन किया गया है ।

3.उद्देश्य (Objectives):

प्रस्तुत शोध -निबंध के उद्देश्य निम्नांकित हैं :

- आदिवासी विमर्श की अवधारणा विशद करना ।

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA PIMPRI PUNE